BA Part II (Hons/Sub)

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Assisted Professor (GT)
Department of Sociology
NSJ college Raj Nagar

Lecture IV

सामाजिक समस्याओं के प्रकार => सामाजिक समस्याएं वे हैं जो लोगों को संबंधों को व्यवस्थित बनाए रखने में असफल प्रतीत होती है। जब समाज की अधिकांश संस्थाओं में विघटन दिखाई दे, नियमों व कानूनों का समाज के सदस्यों द्वारा निर्भीकतापूर्वक एवं बिना हिचकिचाहट के खुलकर उल्लंघन किया जाने लगे एवं समाज के मूल्यों एवं संस्कृति का संचरण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में होना अवरुद्ध हो जाए तथा समाज की आकांक्षाएं लड़खड़ाने लग जाए तब यह परिस्थिति समाज के लिए समस्या होती है।

वे सभी स्थितियां सामाजिक समस्याएं है जो समाज में सामंजस्य, एकता व सुदृढ़ता को चुनौती प्रदान करें एवं जिनसे यह भय उत्पन्न हो जाए कि ये परिस्थितियां ठीक समय पर नियंत्रित नहीं की जा सकीं तो ये सामाजिक व सांस्कृतिक आदर्शों व मूल्यों को

2020-8-6 13:29

से समाप्त कर देंगी। इन समस्याओं के समाज में विभिन्न स्वरूप परिचित हैं एवं इनके निवारण के लिए संगठित सामूहिक प्रयास हों एवं आगे स्थिति के लिए सावधानीपूर्वक शक्ति का उपयोग किया जाए।

जान. के. फुलेन ने सामाजिक समस्या को दो मुख्य भागों में बांटा है —

(1) प्रकट सामाजिक समस्या — यह समाज की वह दशा है जिसे समाप्त करने के लिए ज्ञात व सुधारात्मक संस्थाओं द्वारा प्रयास किये जाएं जिसके बारे में सार्वजनिक जागरूकता समाज में पाई जाए। अपराध, बाल अपराध जैसी समस्याएं इस श्रेणी में आती हैं।

(2) अप्रकट सामाजिक समस्या — यह समाज की उस दशा को कहा जाता है जिसके निवारण के लिए सार्वजनिक रूप से प्रयास नहीं किये जाते हैं लेकिन जो समाज के लिए अंतिम रूप से चुनौती या खतरा होने लगे। भारत में निर्धनता की समस्या अप्रकट सामाजिक समस्या है।